रायमलवाड़ा गांव (तहसील ओसियां) के किसान प्रतिनिधियों के दल ने संस्थान के शोध प्रक्षेत्रों का भ्रमण किया

रायमलवाड़ा गांव, ओसियां तहसील के किसान प्रतिनिधियों के दल ने कोरोना संक्रमण में सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशो की पालना करते हुए 14 अगस्त, 2020 को संस्थान के शोध क्षेत्रों का भ्रमण कर जानकारी ली। प्रधान वैज्ञानिक डॉ. आर.एन कुम्मावत, डॉ. एस.पी.एस तवर व तकनीकी अधिकारी रवि ने

संस्थान के शोध क्षेत्रों का भ्रमण कराया व संस्थान में चल रहें शोध कार्यो, फसलों व तकनीकियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी। संस्थान के कृषि व्यवसाय अभिपोषण केन्द्र के सभा कक्ष में किसानों को सम्बोधित करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. ओ.पी. यादव ने कहा कि राजस्थान के विभिन्न जिलों में पानी की कमी है अधिक पैदावार के लिए उन्नत किस्मों के बीजों का प्रयोग करें एवं ज्ञान आधारित खेती करें इससे उत्पादन अधिक मिलेगा। संस्थान द्वारा कृषि के विभिन्न माडल जो विकसित किये गये वे बहुत ही उपयोगी हैं, जिसे अपना कर किसान भाई खेती से लाभ ले। किसानों को खेतो मे ऐसे पेड़-पोधे लगाए जो की पशुओ को चारा व छाया प्रदान करे और फसल को भी पेड़ो से नुकसान न हो, उन्होने कम्पोस्ट खाद बनाने का भी सुझाव दिया। विभागाध्यक्ष डॉ. एन.वी.पाटिल ने चारा उत्पादन, संतुलित पोषक पशु, आहार व पशुओं की खेत में चराई व्यवस्था के बारे में विस्तुत जानकारी दी। डॉ. शीरन ने राजस्थान में उगने वाले पेड़.पौधों; खेजड़ी, कुम्मट, रोहिणा, ग्राफिटीग खेजड़ी के बारे में बताया। डॉ. राजोरा ने राजस्थान में पशु चारे के लिए विभिन्न प्रकार की घासों; सेवण, धामण, ग्रामणा, अंजन आदि के बारे में जानकारी दी। डॉ. सुरेन्द्र पूनिया ने एक भूमि इकाई से बिजली उत्पादन, जल संग्रहण, फसल उत्पादन तथा अन्य सौर यंत्रों तथा मूल्य संवर्द्धन के बारे में जानकारी दी। डॉ. एच.आर

महेला व तकनीकी अधिकारी जालम सिंह ने फसल वाटिका में लगी फसल व अन्य प्रक्षेत्र में लगी मूग, मोठ, ग्वार की विभिन्न उन्नत किस्मों व लाभकारी खेती के बारे में जानकारी दी। डॉ एस.पी.एस.तवर ने बाजरा की विभिन्न प्रजातियों के बारे में जानकारी दी। उन्होने बताया कि राजस्थान की मुख्य फसल बाजरा है जिसकी कई नवीन व उन्नत किस्में बहुत ही उपयोगी है। किसानों ने भी अपने गाव मे 700 बीधा गोचर भूमि पर लगी सेवण घास के बारे में विचार रखें और उसके अन्दर पेड़. पौधे लगाने के बारे में विस्तार से जानकारी ली। काजरी फसल वाटिका में लगी फसल व अन्य प्रक्षेत्रों में लगी लहलाती फसल देख कर खुशी जाहिर की। उन्होने निदेशक महोदय् व संस्थान के सभी वैज्ञानिकों का आभार जताया व धन्यवाद ज्ञापित किया।